ब्रह्मलीन सद्गुरु डॉ. करतार सिंह जी महाराज

(अवतरण : 13 जून, 1912 --- निर्वाण : 15 जून, 2012)

रामाश्रम सत्संग, ग़ाज़ियाबाद के पूर्व सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष, परमपूज्य डॉ. करतार सिंह जी महाराज

(पूज्य सरदारजी) का जन्म 13 जून, 1912 को अमृतसर (पंजाब) में एक सम्पन्न सिक्ख परिवार में हुआ था. जब आपकी आयु मात्र 3 वर्ष की थी, आपके पूज्य पिताश्री सरदार संत सिंह साहब ने अमृतसर से आकर मुल्तान शहर में एक दुकान हनुमानजी के प्रसिद्ध मन्दिर के पास खोली. पूज्य करतार सिंह जी जन्म से ही धार्मिक प्रवृति के थे तथा वह प्रत्येक शनिवार उस मन्दिर में दर्शन करने और चोला चढाने जाया करते थे. वहीं पास में नरसिंह भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर भी था. मुल्तान शहर सूफी संतों का शहर कहलाता था जहाँ की चार चीज़ें मशहूर थीं - " चार तोहफ़ा अज मुल्तान - गर्दे गरमा तथा गदा-ए-रेगिस्तान." उस समय मुल्तान शहर में हर तरफ संत ही संत (फ़क़ीर ही फ़क़ीर) तथा चारों तरफ कब्रें तथा मज़ारें थीं तथा रेगिस्तान की धूल उड़ती थी. अपने मुल्तान से प्री-मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की.

जब आपकी आयु लगभग 15 वर्ष की थी, आपके पूज्य पिताश्री परलोकवासी हो गए तथा आप अमृतसर वापस आ गए. इतनी कम आयु में ही आप पर अपने परिवार (पूज्य माताजी, छोटी बहिन तथा भाई) का दायित्व आ गया. प्रारम्भ में आपने एक प्राइवेट नौकरी की किन्तु कुछ ही माह बाद आपको आयकर विभाग में लिपिक की सर्विस मिल गयी. बाद में आप जालंधर में आयकर विभाग में इन्स्पेक्टर हो गए. वहाँ से आप दिल्ली चले आये. आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए. एल.एल. बी. की तथा सी.ए. एवं कम्पनी सेक्रेटरीज की प्रथम वर्ष की परीक्षाएँ पास कीं. सन 1947 में आपका विचार आयकर की प्रैक्टिस करने का हुआ. आपने आपने एक मुसलमान मित्र से कहा कि आपको एक जगह चाहिए. उस मित्र ने कहा कि मेरा एक होम्योपैथिक स्टोर है वह आप सम्भाल लो. पूज्य सरदारजी ने वह दुकान (फतेहपुरी स्थित नेशनल होम्योपैथिक स्टोर्स) सम्भाल ली. ईश्वर की कृपा से वह स्टोर अच्छा चलने लगा.

आपके होम्योपैथिक स्टोर्स पर सौम्य व्यक्तित्व, मधुर मुस्कान युक्त, शान्त प्रकृति के एक संत-पुरुष दवा लेने आते थे. वह जब भी दवा लेने आते थे, सरदार जी से बड़े प्रेम से व्यवहार करते थे. यह महापुरुष थे परमपूज्य डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी भटनागर जो कालान्तर में पूज्य सरदारजी के तारनहार गुरु बने.

आपका परम पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्णलाल जी की शरण में आने का प्रसंग, जिसका उल्लेख पूज्य डॉ. महेश चंद्र जी की कृति ' सवाने उमरी ' में किया गया है, इस प्रकार है.

सन 1951 की बात है. पूज्य गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी के कनिष्ठ भ्राता श्री गिरिवर कृष्ण जी भटनागर के तिमारपुर (दिल्ली) निवास पर सत्संग का आयोजन था. श्री गिरिवर कृष्ण जी आयकर विभाग में अधिकारी थे और आप भी आयकर विभाग में कार्य करते थे. आयकर विभाग के एक वकील, श्री श्रीराम भार्गव, पूज्य गुरुदेव के पूर्व परिचित थे और सिकन्दराबाद गुरुदेव की सेवा में आया करते थे. इन तीनों में परस्पर घनिष्ठता थी. इस नाते वकील साहब ने आपसे उपरोक्त सत्संग में चलने का आग्रह किया और आपको अपने साथ सत्संग में ले आये. पूज्य गुरुदेव के साथ अन्य सत्संगी भी पधारे हुए थे.

सत्संग की समाप्ति पर वकील साहब ने गुरुदेव से चलने की आज्ञा मांगी. वकील साहब को तो आज्ञा मिल गयी किन्तु आपसे कहा - सरदारजी आप रुकिए." गुरुदेव के इन शब्दों में अद्भुत प्रेम था. कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात् गुरुदेव ने आपसे कहा - " हम आपके घर चलेंगे." गुरुदेव और आपकी दोनों की आत्मा पूर्व परिचित थी. गुरुदेव पारखी महापुरुष थे , उन्होंने आपमें गुरुमुख शिष्य (मुराद) को पहचान लिया. गुरुदेव आपके निवास स्थान पर गए, भोजन ग्रहण किया और बड़े प्रसन्न हुए. इस प्रकार दो बिछड़ी हुई आत्माओं का पूर्व परिचय जाग्रत अवस्था में आ गया.

इस प्रथम मिलन के बाद आप पूज्य गुरुदेव की सेवा में सिकन्दराबाद या ग़ाज़ियाबाद, जहाँ भी गुरुदेव पधारे होते थे, आने लगे.आपसे गुरुदेव को बहुत प्रेम था. जब आप पहली बार सिकन्दराबाद गए तो गर्मी के दिन थे. पूज्य गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथों से कुएं में से दो बाल्टी जल निकालकर स्नानागार में रख दिया और एक धुली हुई धोती, तौलिया आदि की व्यवस्था कर स्नानागार के बाहर एक जोड़ी अपनी चप्पलें भी रख दीं. जब तक आप कमरे में अपना पसीना सुखायें, नहाने का सब प्रबन्ध पूज्य गुरुदेव स्वयं अपने हाथों से कर चुके थे. आकर आपसे कहा कि आप स्नान कर लीजिये. आपको कुछ संकोच लगा कि नहाकर बदलने के लिए हम वस्त्र भी नहीं लाये हैं, किन्तु आपने आज्ञा का पालन किया. स्नानागार में गए, यह देखकर विस्मित हो गए कि कपड़े भी मौजूद हैं और पहनने के लिए गुरुदेव अपनी चप्पलें भी रख गए हैं.

शनैः शनैः आपमें गुरु प्रेम प्रस्फुटित, पल्लिवत और पुष्पित होने लगा. आपने अपना तन-मन-धन सच्चे मायने में पूज्य गुरुदेव के अर्पण कर दिया. एक बार आपकी चाह उठी कि घर छोड़कर सन्यासी हो जायें. आपने पूज्य गुरुदेव से आज्ञा माँगी तो गुरुदेव ने आदेश दिया कि - " आप अपनी दुकान पर मालिक की हैसियत से काम न करें और हैं भी आप मुलाज़िम (नौकर) ही. गलती से आप अपने को मालिक समझे हुए हैं. अगर दुकान आपके साथ आयी होती तो आपके साथ जाती. ऐसा है नहीं, आपकी परेशानी का यही कारण है. "

सन 1952 में आपके पूज्य गुरुदेव की विशेष कृपा आप पर हुई जब उन्होंने आपको अनामी पुरुष के दर्शन कराये और सत्संग के कार्य हेतु विशेष रूप से अपना लिया. किन्तु आपकी विधिवत दीक्षा 1960 में हुई और आध्यात्मिक शिक्षा आपको मौन में मिलती रही. आपने एक सच्चे और दीन शिष्य के रूप में स्वयं को समर्पित किया और अपने गुरु की प्रत्येक आज्ञा का अक्षरशः पालन किया. गुरुदेव ने भी अपना सब कुछ आपको प्रदान कर दिया. सन 1964 में आपको सम्पूर्ण आचार्य पदवी लिखित रूप में प्रदान कोई गयी

पूज्य गुरुदेव जब कभी सत्संग के दौरे पर जाते तो आप सदैव ही उनके साथ जाते थे और सेवा कार्य में गुरुदेव का हाथ बटाते थे. पूज्य गुरुदेव आपको अपने समकालीन संतमत के अन्य संतों के पास भी ले जाते थे और अपने चयन की पुष्टि कराते थे. एक बार पूज्य गुरुदेव माउन्ट आबू में एक उच्च कोटि के संत से मिलने गए और अपने उत्तराधिकारी की बात उनके सामने रखी. तब उन संत जी ने कहा था कि - *" डाक्टर साहब, आपका बोझा तो एक सरदार ढोयेगा."* कहने का आशय यह है कि पूज्य गुरुदेव का आपके प्रति जो प्रेम और व्यवहार था उसे देखकर सभी को निश्चित रूप से यह संकेत मिलने लगा था कि पूज्य गुरुदेव के उत्तराधिकारी आप ही होंगे. हुआ भी ऐसा ही.

सन 1970 की बसंत पंचमी पर पूज्य गुरुदेव ने 8 फरवरी (रविवार) के दिन सिकन्दराबाद में ही भण्डारा रखा था क्योंकि अपनी अस्वस्थता के कारण वे बाहर नहीं जा सकते थे. सत्संग हो रहा था. पूज्य गुरुदेव सत्संग भवन के चौक के बायीं तरफ के कमरे में सामने की ओर अपने पलंग पर विराजमान थे. पूज्य गुरुदेव ने फ़रमाया कि " बंदा शायद अगले भंडारे तक न रह पाए, इसलिए इस सत्संग का भार मैं सरदार करतारसिंह, डॉ. हरि कृष्णा और बसंत बाबू को सौंपता हूँ. इन तीनों को मुक़म्मिल (पूर्ण))इज़ाज़त है और सरदार जी इनके बड़े भाई हैं, जिनकी देख-रेख में यह दोनों सत्संग की जिम्मदारियों को संभालेंगे." फिर जो गद्दी गुरुदेव के बैठने के लिए बिछी हुई थी उस पर आपको (सरदारजी भाई साहब को) बैठने का आदेश दिया. पूज्य गुरुदेव के कई बार आग्रह करने पर आप उस गद्दी तक गए और अपना दाहिना हाथ उस पर रख कर वापस पूज्य गुरुदेव के पाँयते ज़मीन पर बैठ गए. कुछ देर बड़ी गम्भीर मुद्रा में चुपचाप बैठे रहे और फिर गदगद कण्ठ से यह प्रार्थना गायी :

मोकों कछु न चहिए राम, मोकों कछु न चहिए राम !

तुम बिन सब ही फींके लागें, नाना सुःख, धन -धाम !!

सुन्दरि संतति सेवक सब गुण, बुद्धि विद्या भरपूर !

कीरति, कला, निपुणता नीती, इनसौं रखिये दूर !!

आठ सिद्धि नव निद्धि आपनी , और जनन कों दीजै !

मैं तो चेरो जनमजनम को, कर धरि अपनो कीजै !!

उस समय वातावरण इतना स्तब्ध था, और ऐसी अमृत वर्षा हो रही थी कि उपस्थित समुदाय के नेत्रों से अश्रुपात हो रहा था. पूज्य गुरुदेव के पुनः कहा कि -" इसकी तहरीरी (लिखित) आज्ञा भी लिख दी है, जो राम सन्देश में निकाल दी जावेगी.

पूज्य गुरुदेव से प्राप्त प्रेम के सम्बन्ध में आपने अपनी पुस्तक " प्रेम का सूर्य " की भूमिका में लिखा है - " हमारे यहाँ का सिलसिला ही प्रेम और समर्पण का है. अथाह प्रेम के वे (पूज्य गुरुदेव) सागर थे, उनसे मिले असीम प्रेम को वर्णन करने में मेरी भाषा और लेखनी दोनों ही असमर्थ हैं. उनका वह प्रेम ही तो था जिसने मुझे सेवा के योग्य बनाया, अन्यथा साधन तो बहुत बड़ी चीज़ थी मेरे लिए. जिस दिन से मुझे उनके चरणों का आश्रय मिला, अनवरत हो रही प्रेम वर्षा में जाने-अनजाने मैं लीन होता चला गया. मेरे एक अच्छे मित्रों में से थे जो पूज्य गुरु महाराज को जानते थे. मेरा दैनिक जीवन उनसे छिपा हुआ न था. वह यह भी जानते थे कि गुरु महाराज मुझसे बहुत प्यार करते हैं. नित जीवन में मैं कोई साधन या पूजा नहीं करता था. एक बार उन्होंने इस बात की शिकायत गुरु महाराज से की. इस शिकायत की कोई भी प्रतिक्रिया गुरु महाराज पर नहीं हुई. गुरु महाराज प्रायः मेरी दुकान पर आते थे. उनसे मिलने के लिए मेरे मित्र भी आते थे. एक बार पुनः उन्होंने मेरे साधन-पूजा न करने की बात गुरु महाराज को बताई. आश्चर्य तो तब हुआ जब बिना किसी प्रतिक्रिया के बहुत ही शान्त भाव से गुरु महाराज ने कहा - "सरदारजी को कुछ करने की क्या आवश्यकता है उनके लिए तो मैं कर ही रहा हूँ." ऐसा था उनका असीम प्यार. यह वह असीम प्यार था जिसमें मैं मदमस्त खोया रहता था. आज भी प्रतिपल उस मधु वर्षा की अनुभूति तो होती रहती है. यह अलौकिक अथाह प्रेम ही तो आज मेरा पाथेय है."

आप आपने गुरुदेव के साथ विभिन्न प्रांतों में सत्संग हेतु जाते रहते थे तथा उनके संरक्षण में उनके मिशन को आगे बढ़ाने में योगदान देते रहते थे. सन 1970 में अपने गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद तो आपने तन, मन, धन से स्वयं को इस मिशन और सत्संग के विस्तार के लिए पूरी तरह से समर्पित कर दिया. अपना स्वास्थ्य कैसा भी हो इसकी आपने कभी परवाह नहीं की. सर्दी, गर्मी सभी मौसम में सत्संगी भाइयों के साथ सदैव स्लीपर में ही यात्रा करते थे. सत्संगी भाइयों का बहुत आग्रह करने के बाद भी आपने आपने लिए कोई विशेष सुविधा नहीं ली. भोजन भी वही लेना पसन्द करते थे जो सबके लिए बनता था. आपके मार्ग दर्शन में रामाश्रम सत्संग का व्यापक विस्तार हुआ तथा आज देश के अनेक प्रांतों में सत्संग की शाखाएं कार्यरत हैं. अपने पूज्य गुरुदेव के सभी दैवीय गुण आपके व्यक्तित्व में उतर आये

थे. आप प्रेम, दीनता, करुणा, दया और सेवा की जीती जागती प्रतिमा थे. स्वयं को सबसे छोटा मानना और दूसरों को आदर और सम्मान देना आपका सरल स्वभाव था.

आपके प्रवचनों में ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और सभी पंथों के धर्म ग्रंथों का सारगर्भित अर्थ सहित व्याख्या मिलती है. ईसामसीह का बलिदान, हज़रत मोहम्मद साहब की शिक्षायें, भगवान बुद्ध के पाँच मराक़वे, गीता का सार और उपदेश, पूज्य दादा गुरुदेव की प्रवचन प्रसादी के अमृतकण - सभी का प्रसाद आपके प्रवचनों में साधकों को मिलता था.

रामाश्रम सत्संग की परम्परा एवं संस्था के विधान के नियम 5(3) तथा 10 के अनुसार सत्संग केआचार्य -अध्यक्ष को अपने जीवन काल में ही अपने उत्तराधिकारी नियुक्त करने का अधिकार होता है. इस व्यवस्था के अनुसार पूज्य डॉ. करतारसिंह जी ने दिनाँक 14-11-1994 को लिखित आज्ञा-पत्र जारी करके अपने बाद अपने स्थान पर पूज्य डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी, गाज़ियाबाद को रामाश्रम सत्संग के सर्वोच्च आचार्य के पद पर नियुक्त किया. डॉ. शक्ति कुमार जी को सम्पूर्ण आचार्य गुरु पदवी पूर्व से ही प्राप्त थी.

दिनाँक 15 जून, 2012 को परमपूज्य डॉ. करतारसिंह जी साहब अपनी जीवन लीला पूर्ण कर ब्रह्मलीन हो गए. उनके ब्रह्मलीन होने के पश्चात, उपरोक्त्त व्यवस्था के अनुसार, पूज्य डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी, ने रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद के सर्वोच्च आचार्य-अध्यक्ष का दायित्व ग्रहण किया तथा वह वर्तमान में इस पद पर आसीन होकर अपने पूर्वज गुरुजनों के मिशन को कुशलतापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं.

ब्रह्मलीन होने के पश्चात् आपकी १०१वी जन्म जयंती व प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर परमपूज्य डॉ. शक्तिकुमार जी ने अपने उदगार इस प्रकार व्यक्त किये हैं :

" अटूट प्रेम और श्रद्धा का जीवंत उदाहरण अगर कोई है तो वे हैं हमारे गुरुदेव परमसन्त डॉ. करतार सिंह जी साहब जिन्होंने अपना पूरा जीवन अपने गुरुदेव को समर्पित कर दिया. वे अपने गुरुदेव के किसी भी आदेश का पालन करना अपना धर्म समझते थे. ऐसे बहुत कम संत हुए हैं जो शतायु हुए हों और हमारे गुरुदेव उनमें से एक हैं. आज स्थूल रूप में गुरुदेव हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन यह भी सत्य है कि सूक्ष्म रूप में आज भी वे हमारे साथ हैं और हम सब पर उनकी अपार कृपा निरंतर बरस रही है जिसको हम सब बार-बार महसूस कर रहे हैं और करते रहेंगे. वे बड़े ही प्यार से कहा करते थे ' बोलो आप की क्या सेवा कर सकता हूँ ?" हर कोई इस कदर भाव विभोर हो जाया करता था कि आगे कुछ भी कहने कोई हम्मत ही नहीं होती थी. गुरुदेव हमेशा एक बात पर ज़ोर दिया करते थे कि "आप चाहे कोई भी साधन करिये दीनता को तो अपनाना ही होगा. अहँकार से प्रभु नहीं मिलते, अहँकार ही हमारी

सबसे बड़ी बाधा है." उनका कहना था " कितने बरस हो गए सत्संग में आते हुए परन्तु अभी भी हम असंतुष्ट हैं." उनका यह भी कहना था कि ' हमें निरंतर मनन और स्वनिरीक्षण (introspection) करना चाहिए,.....हम आज कहाँ हैं,.....हमारी मानसिक स्थिति क्या है.?"

हम ईमानदारी से अपने भीतर झाँक कर देखें कि क्या हमने सच्चे रूप में दीनता को अपनाया है ? क्योंकि यह सत्य है कि हम जब तक दीनता को नहीं अपनायेंगे हमारा कल्याण नहीं हो सकता. हम दूसरों के अवगुण तो देखते हैं, परन्तु हम अपने भीतर देखें तो जो अवगुण हम दूसरों में देखते हैं वो अपने अन्दर ही नज़र आएंगे. उन्हें दूर करने के लिए निज कृपा और गुरु कृपा दोनों का सहारा लेना होगा.

आज समय आ गया है कि हम अपनी कमियों को समझें और देखें कि हम कैसे उन कमियों को दूर कर सकते हैं, और जैसा गुरुदेव चाहते थे वैसा बनने की कोशिश करें. मेरा यह मानना है और सविनय अनुरोध है कि यदि हम सेवा को अपने जीवन में अपना लें तो जीवन बहुत ही सरल हो जायेगा और हम देखेंगे कि हममें दीनता और प्रेम दोनों ही अपने आप आ जायेंगे और हम उस परम अवस्था को प्राप्त कर सकेंगे जो हमारे जीवन का लक्ष्य है.

(राम सन्देश सितम्बर-अक्टूबर 2012)

हम सब अत्यन्त भाग्यशाली हैं कि हमें एक ऐसे हे महान संत परम पूज्य गुरुदेव डॉ. करतार सिंह जी की शरण मिली जिनकी असीम कृपा से हमारे न जाने कितने जन्मों के संस्कारों एवं कर्मों से मुक्ति मिल गयी. आज भी यह अहसास होता है कि वे यहीं कहीं हैं और मैं समझता हूँ कि मेरी तरह और भी सत्संगी भाई-बहिनों को भी ऐसा महसूस होता होगा. मेरा यह मानना है कि यदि हम आजीवन उनके प्रति अपनी कृतग्यता व्यक्त करें तो भी कम हैं.

oooooooo